भारत की सात पवित्र नदियाँ

- वैदिक संस्कृति और रीति के अनुसार प्रातः-स्नान के समय नीचे दिए जा रहे स्नान-मंत्र द्वारा सात पवित्र नदियों का आह्वान किया जाता है –

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

अर्थात – "हे गंगा और यमुना, गोदावरी और सरस्वती, नर्मदा, सिंधु और कावेरी ! (आप सभी) मेरे इस जल में पधारिए।" (इसका भावार्थ यह है कि मैं आपका आह्वान करता हूँ, ताकि मैं इस जल में स्नान कर अपने सभी पापों का विनाश कर सकूं)।

- भारत की उपरोक्त सात पवित्र नदियों का संक्षिप्त विवरण उसी क्रम में नीचे दिया जा रहा है –

- 1. **गंगा नदी :**
  - गंगा भारत की सबसे बड़ी और सबसे पवित्र नदी है, इसकी उपासना पूरे भारत में माँ और देवी के रूप में की जाती है।
  - गंगा नदी उत्तराखंड में '**गंगोत्री**' से निकलकर उत्तर और पूर्वी भारत के विशाल भू-भाग को सींचती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
  - गंगा का आरम्भ अलकनन्दा व भागीरथी नदियों से होता है। गंगा की प्रधान शाखा '**भागीरथी**' है, जो उत्तराखंड राज्य के गोमुख नामक स्थान पर गंगोत्री हिमनद (ग्लेशियर) से निकलती है। '**देव प्रयाग**' में '**अलकनन्दा**' भागीरथी से मिलती है, जिसके पश्चात वे गंगा नदी के रुप में पहचानी जाती हैं।
  - संकरा पहाड़ी रास्ता तय करके गंगा नदी ऋषिकेश होते हुए मैदानों का स्पर्श हरिद्वार में करती है। **हरिद्वार में गंगा नदी के तट पर हर 12 वर्ष के लगभग महा-कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है।**
  - हरिद्वार के बाद गंगा किनारे बसा हुआ नगर '**गढ़मुक्तेश्वर**' भी एक पवित्र तीर्थ स्थल है।
  - उसके बाद गंगा नदी कानपुर होते हुए प्रयागराज पहुँचती है, जहाँ इसमें यमुना आकर मिलती है। प्राचीन समय में यहाँ सरस्वती नदी का भी जल मिलता था (इस विषय की विस्तृत जानकारी **"सरस्वती नदी"** के अंतर्गत दी गई है), जिसके कारण इसे '**त्रिवेणी संगम**' के नाम से जाना जाता है।
  - **प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर हर 12 वर्ष के लगभग महा-कुंभ का आयोजन होता है।**
  - प्रयागराज से गंगा नदी **धार्मिक नगरी वाराणसी (काशी)** पहुंचती है और वहाँ से मिर्जापुर, पाटलिपुत्र, भागलपुर होते हुए पश्चिम बंगाल पहुँचती है।
  - पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के गिरिया नामक स्थान के पास गंगा नदी दो शाखाओं में विभाजित हो जाती है- '**भागीरथी**' और '**पद्मा**'। भागीरथी नदी गिरिया से दक्षिण की ओर बहने लगती है जबकि पद्मा नदी दक्षिण-पूर्व की ओर बहती फरक्का बैराज से छनती हुई बांग्लादेश में प्रवेश करती है।

- मुर्शिदाबाद से हुगली शहर तक गंगा का नाम '**भागीरथी नदी**' तथा हुगली शहर से मुहाने तक '**हुगली नदी**' है। हुगली नदी कोलकाता, हावड़ा होते हुए अंततः सुंदरवन के भारतीय भाग में सागर से संगम करती है। गंगा नदी और बंगाल की खाड़ी के संगम पर प्रसिद्ध तीर्थ '**गंगा-सागर-संगम**' है, जहाँ प्रति-वर्ष मकर संक्रांति पर बहुत बड़ा मेला लगता है।
- भारत में गंगा नदी की लंबाई लगभग 2525 किलोमीटर है।

➢ **2. यमुना नदी :**

- भारत की सर्वाधिक पवित्र और प्राचीन नदियों में यमुना की गणना गंगा के साथ की जाती है। यमुना और गंगा के दो-आब की पुण्य-भूमि में पुरातन वैदिक संस्कृति का भरपूर विकास हुआ था।
- यमुना नदी हिमालय में उत्तरकाशी के उत्तर में '**यमुनोत्री**' नामक स्थान से निकलती है।
- हिमालय से निकल कर उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा की सीमा के सहारे लगभग 150 किo मीo की यात्रा कर यमुना नदी उत्तरी सहारनपुर के मैदानी इलाके में पहुँचती है।
- वहाँ से यह दिल्ली होते हुए **ब्रज भूमि (वृन्दावन, मथुरा और गोकुल)** पहुँचती है। ब्रज की संस्कृति और श्रीकृष्ण के बचपन से यमुना का अत्यंत महत्वपूर्ण और पवित्र सम्बन्ध रहा है।
- मथुरा-गोकुल से आगरा शहर और आगरा के बाद '**बटेश्वर**' का सुप्रसिद्ध धार्मिक स्थल आता है। यहाँ पर कार्तिक पूर्णमा को यमुना स्नान का एक बड़ा मेला लगता है।
- बटेश्वर से आगे यमुना तट पर बसा हुआ शहर इटावा है। इटावा से आगे मध्य प्रदेश की प्रसिद्ध नदी चम्बल यमुना में आकर मिलती है, जिससे इसका आकार बहुत बढ़ जाता है।
- इटावा के पश्चात यमुना के तटवर्ती नगरों में काल्पी, हमीरपुर और प्रयागराज मुख्य हैं। प्रयागराज में '**त्रिवेणी संगम**' पर यमुना गंगा में मिल जाती है।
- यमुना नदी की कुल लम्बाई उद्गम से लेकर त्रिवेणी संगम तक लगभग 1375 किलोमीटर है।

➢ **3. गोदावरी नदी :**

- गोदावरी नदी दक्षिण भारत की सबसे बड़ी एवं सबसे पवित्र नदी है, और गंगा नदी के बाद भारत की दूसरी सबसे बड़ी नदी है। इसलिए इसे **"दक्षिण की गंगा"** भी कहा जाता है।
- यह महाराष्ट्र में नासिक के पास त्र्यंबकेश्वर से निकलती है और महाराष्ट्र के नांदेड़ (Nanded) होते हुए, तथा तेलंगाना और आंध्र प्रदेश से बहते हुए, राजहमुन्द्री शहर के समीप बंगाल की खाड़ी मे जाकर मिलती है।
- गोदावरी नदी की कुल लम्बाई लगभग 1465 किलोमीटर है।
- **हर 12 वर्ष के लगभग नासिक में गोदावरी नदी के तट पर कुंभ मेला लगता है।**

- हरिद्वार में गंगा तट, प्रयागराज में त्रिवेणी संगम और नासिक में गोदावरी तट के अतिरिक्त **कुंभ-आयोजन का चौथा स्थान है- उज्जैन में क्षिप्रा नदी का तट।**

➢ **4. सरस्वती नदी :**

- ऋग्वेद में सरस्वती नदी का कई बार उल्लेख किया गया है और इसे 'परम पवित्र नदी' कहा है। सरस्वती नदी को 'यमुना के पूर्व' और 'सतलुज के पश्चिम' में बहती हुई और सिंधु सागर (जो अब हिन्द महासागर या Indian Ocean के नाम से जाना जाता है) में मिलने वाली नदी बताया गया है।
- वैदिक काल में इसी नदी के किनारे ऋषियों ने वेद रचे और वैदिक ज्ञान का विस्तार किया। इसी कारण सरस्वती को विद्या और ज्ञान की देवी के रूप में भी पूजा जाता है।
- वैज्ञानिक और भूगर्भीय खोजों से पता चला है कि किसी समय इस क्षेत्र में भीषण भूकम्प आए, जिसके कारण हरियाणा तथा राजस्थान की धरती के नीचे के पहाड़ ऊपर उठे, तो नदियों के बहाव की दिशा बदल गई। **यही वह काल था जब सरस्वती नदी का जल यमुना में मिल गया**, जबकि ऋग्वेद काल में सरस्वती समुद्र में गिरती थी। **यमुना के साथ सरस्वती का जल भी प्रयागराज में पहुँच कर गंगा में मिलने लगा। संभवतः इसीलिए प्रयागराज में तीन नदियों का संगम (त्रिवेणी संगम) माना जाता है।**
- वाल्मीकि रामायण में भरत के कैकय देश से अयोध्या आने के प्रसंग में सरस्वती और गंगा को पार करने का वर्णन है, जबकि महाभारत में सरस्वती नदी के मरुस्थल में 'विनाशन' नामक जगह पर विलुप्त होने का वर्णन आता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि **रामायण-काल और महाभारत-काल के बीच में सरस्वती नदी विलुप्त हो गई थी।**
- वर्तमान काल में एक धारणा यह भी है कि सरस्वती नदी हिमालय में बद्रीनाथ धाम से थोड़ा ऊपर माना गांव के पास अपने उद्गम स्थल से निकल कर कुछ दूर सतह पर चलने के उपरांत पृथ्वी की सतह के नीचे चली जाती है। **पृथ्वी के अंदर बहते हुए यह धारा त्रिवेणी संगम पर गंगा और यमुना से जा मिलती है।**

➢ **5. नर्मदा नदी :**

- नर्मदा, जिसे **'रेवा'** के नाम से भी जाना जाता है, भारत की एक दिव्य नदी है। इसकी महिमा का वर्णन वेदव्यास जी ने **'स्कन्द पुराण'** के **'रेवाखंड'** में किया है। रामायण तथा महाभारत में भी इस दिव्य नदी के कई उल्लेख हैं।
- लगभग सभी ऋषिओं, मुनिओं और देवताओं (गणेश, कार्तिकेय, राम, लक्ष्मण, हनुमान आदि) ने नर्मदा नदी के तट पर ही तपस्या करके सिद्धि प्राप्त की। नर्मदा के दक्षिण तट पर, जहाँ भगवान् सूर्य ने घोर तपस्या की थी, **सूर्य देवता का 'आदित्येश्वर तीर्थ'** है।

- नर्मदा नदी का हर एक पाषाण **'नर्मदेश्वर-शिवलिंग'** के रूप में बिना प्राण-प्रतिष्ठा के पूजित होता है, जबकि दूसरे पाषाण से निर्मित शिवलिंग की स्थापना के लिए उसकी प्राण-प्रतिष्ठा अनिवार्य है।
- नर्मदा नदी का उद्गम मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले में विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत-श्रेणियों के संधि-स्थल पर स्थित अमरकंटक में '**नर्मदा कुंड**' से हुआ है।
- अपने उद्गम से पश्चिम की ओर मध्य प्रदेश और गुजरात राज्यों में लगभग 1,310 किलोमीटर बहने के बाद नर्मदा नदी भरूच के पास अरब सागर में जा मिलती है।

➢ 6. सिन्धु नदी :

- सिन्धु नदी (जिसे अंग्रेज़ी में Indus River कहते हैं) एशिया की सबसे लंबी नदियों में से एक और भारत की सात पवित्र नदियों में से एक है।
- ऋग्वेद में कई नदियों का वर्णन किया गया है, जिनमें से सिंधु का नाम सबसे अधिक बार लिया गया है।
- सिन्धु नदी का उद्गम स्थल हिमालय में **कैलाश** के समीप पश्चिमी तिब्बत के अन्दर है।
- अपने उद्गम से निकल सिंधु नदी पश्चिमी तिब्बत को पार कर भारत में लद्दाख और कश्मीर होते हुए पाकिस्तान पहुँचती है, और वहां के मैदानों में बहती हुई कराँची के दक्षिण में अरब सागर में गिरती है। इसकी कुल लम्बाई लगभग 3180 किलोमीटर है ।
- **'सिन्धु घाटी की सभ्यता'**, जो हड़प्पा सभ्यता और सिन्धु-सरस्वती सभ्यता के नाम से भी जानी जाती है, विश्व की तीन प्राचीनतम नदी-घाटी सभ्यताओं में सबसे व्यापक तथा सबसे अधिक चर्चित सभ्यता थी। अन्य दो थीं - प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताएँ।

➢ 7. कावेरी नदी :

- परम-पवित्र कावेरी नदी (Kaveri or Cauvery River, in English) का वर्णन पुराणों में बार-बार आता है। इसका विस्तृत विवरण **'विष्णु पुराण'** में दिया गया है।
- यह कर्नाटक तथा उत्तरी तमिलनाडु में बहनेवाली एक ऐसी नदी है जिसमें जल का प्रवाह हमेशा बना रहता है।
- कावेरी नदी कर्नाटक राज्य के कोडागु जिला में पश्चिमी घाट की ब्रह्मगिरि पर्वत-माला में '**ताल-कावेरी**' से निकलती है। वहां से दक्षिण-पूर्व की दिशा में कर्नाटक और तमिलनाडु में बहती हुई लगभग 800 किलोमीटर लम्बा मार्ग तय कर कावेरीपट्टनम के पास बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है।
- कावेरी नदी के उद्गमस्थल पर '**कावेरी-कुंड**' में हर साल **'देवी कावेरी-अम्मा'** का उत्सव मनाया जाता है।
- कावेरी नदी के अंदर तीन द्वीप हैं, जिनपर **'आदिरंगम', 'शिवसमुद्रम'** तथा **'श्रीरंगम'** नाम से भगवान् विष्णु के भव्य मंदिर हैं।
- इसके तट पर अनेक प्राचीन तीर्थ नगर बसे हैं, जिनमें तंजौर, कुंभकोणम तथा त्रिचिरापल्ली प्रमुख हैं।